आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

# पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 9 अंक : 1 सितम्बर, 2021 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

## मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

## 75वें स्वाधीनता दिवस पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ( डॉ. ) सतीश के. गर्ग द्वारा दिये गये उद्‌बोधन के अंश

राजुवास परिवार के समस्त देवियों एवं सज्जनों, समस्त छात्र–छात्राओं, शिक्षकों, कर्मचारी बन्धुओं एवं अधिकारियों, स्वाधीनता दिवस के 75वें पर्व पर आप सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। देश के स्वतंत्रता आंदोलन में स्वतंत्रता सेनानियों, अमर शहीदों और आजादी के दीवानों के कड़े संघर्ष और बलिदान की बदौलत ही हमें यह दिन देखने व मनाने का अवसर प्राप्त हुआ है। आज का यह पर्व उन शहीदों के स्मरण और नमन का दिन है। हमारी कड़ी मेहनत, लगन और कार्यनिष्ठा से ही देश नित नई ऊंचाईयों को छू सकता है। अतः हम सभी पूर्ण समर्पण भाव से देशहित में कार्य करेंगे। कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौर में भी विश्वविद्यालय के छात्रों, शिक्षकों, कर्मचारियों और अधिकारियों ने इसकी चुनौतियों का सामना बाखूबी किया है तथा विश्वविद्यालय की प्रगति की रफ्तार को रूकने नहीं दिया। शैक्षिक, अनुसंधान व प्रसार कार्यक्रमों के विस्तार की बदौलत ही राजुवास देश के श्रेष्ठतम वेटरनरी विश्वविद्यालय में शामिल हुआ है। बीकानेर में डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय और बस्सी (जयपुर) में डेयरी व खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय की स्थापना की घोषणा से अब यह विश्वविद्यालय एक बहुसंकाय विश्वविद्यालय में परिवर्तित हो गया है जो कि वेटरनरी विश्वविद्यालय की एक बड़ी उपलब्धि है। विश्वविद्यालय में नवीन शिक्षा नीति के अनुरूप शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने के साथ–साथ प्रयोगशालाओं का सुदृढ़ीकरण करना होगा तथा नये पाठयक्रम शुरू करने पर विचार करना होगा। स्थानीय जलवायु और उपलब्ध नस्ल के पशुधन के अनुकूल एप्लाईड रिसर्च हमारी प्राथमिकता होगी। एकीकृत कृषि पशुपालन की संकल्पना को साकार करने की दिशा में हम आगे बढेंगे। मत्स्य, मुर्गी पालन कृत्रिम गर्भाधान व पशुनस्ल सुधार के रिफ्रेशर पाठ्यक्रम और प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाएगा। हाल ही में राज्य सरकार द्वारा जोबनेर (जयपुर) में एक नये पशु विज्ञान केन्द्र की स्थापना को मंजूरी प्रदान की है। ई–पशुपालक चौपाल के माध्यम से पशुचिकित्सा एवं स्वास्थ्य और रोग निदान विशेषज्ञों की वार्ताओं से 55 हजार से अधिक किसान–पशुपालकों ने देखा और सुना। विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर देशी गायों में भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक के सफल प्रयोगों के सुखद परिणाम प्राप्त होने प्रारंभ हो गये हैं। विश्वविद्यालय के जयपुर स्थित पी.जी. आई.वी.ई.आर. के पशुधन फॉर्म संकुल में भ्रूणप्रत्यारोपण द्वारा राठी गाय से उच्च गुणवत्ता वाले गिर नस्ल के बछड़े का सफलतापूर्वक जन्म हुआ है। वेटरनरी विश्वविद्यालय की जयपुर स्थित उन्नत दुग्ध परीक्षण व अनुसंधान प्रयोगशाला को राष्ट्रीय परीक्षण और अंशशोधन प्रयोगशाला प्रत्यापन बोर्ड (एनएबीएल), नई दिल्ली द्वारा प्रदत्त मान्यता से दुग्ध के सूक्ष्म जीवों की मानक तकनीक से जांच कर उसकी गुणवत्ता का आंकलन अब प्रदेश में ही सम्भव हो सकेगा। इस वर्ष पशुचिकित्सा शिक्षा एवं विज्ञान विषयों पर राजुवास द्वारा कई राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय वेबिनारों का सफल आयोजन किया गया जिनमें विश्वविद्यालय के विद्यार्थी, शिक्षकों, वैज्ञानिक–विशेषज्ञों नें बड़ी संख्या में भाग लिया। वेटरनरी के स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएच.डी. छात्र–छात्राओं के लिए पशुचिकित्सा के विशेष क्षेत्रों में ज्ञान और कौशल विकास के लिए नियमित पाठ्यक्रमों के साथ–साथ एड–ऑन सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम की शुरूआत की जा रही है। यह विद्यार्थियों के आगामी व्यवसायिक जीवन में बहुत मददगार होगी और फील्ड वेटेनेरियन्स के कौशल विकास में सहायक सिद्ध होगें। पशुचिकित्सा के क्षेत्र में विभिन्न राष्ट्रीय व स्वयंसेवी संस्थाओं से आपसी करार समय की आवश्यकता के अनुरूप कार्यशील है एवं इनको अधिक प्रभावी एवं सार्थक बनाने की आवश्यकता है ताकि फैकल्टी व विद्यार्थियों को इन संस्थानों के अनुभव व संसाधनों का लाभ मिल सके एवं तकनीकों का आदान–प्रदान हो सके। वेटरनरी विश्वविद्यालय के बढ़ते कार्य क्षेत्र, पशुपालकों की अपेक्षाओं, शैक्षणिक गुणवत्ता, शोध के नये आयाम एवं विभिन्न शोधों एवं तकनीकों को गांव–ढाणी तक पहुँचाने एवं राजुवास को पशुचिकित्सा एवं पशुपालन क्षेत्र की एक उत्कृष्ट संस्था के रूप में स्थापित करने हेतु हम सबको कर्मबद्ध समयबद्ध एवं वचनबद्ध होकर आगे बढ़ना होगा। अमर शहीदों के पुण्य स्मरण के साथ, स्वाधीनता दिवस की पुनः हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देता हूँ। **''जय हिन्द जय भारत''**

## प्रो. सतीश के. गर्ग वेटरनरी विश्वविद्यालय के नए कुलपति

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति पद का कार्यभार 9 अगस्त, 2021 को प्रो. सतीश के. गर्ग ने ग्रहण कर लिया। राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र ने 6 अगस्त को प्रो. गर्ग को वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति के पद पर नियुक्त किया था। निवर्तमान कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने उन्हें कार्यभार सौपा। प्रो. गर्ग वेटरनरी फार्मेकोलॉजी के प्रख्यात वैज्ञानिक है जिन्हें 35 वर्ष को शैक्षणिक और प्रशासनिक अनुभव है। प्रो. गर्ग उत्तर प्रदेश पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गौ अनुसंधान संस्थान, मथुरा में कई वर्षो तक अधिष्ठाता के पद पर कार्य कर चुके हैं। इससे पूर्व बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना में कुलसचिव के पद पर कार्यरत थे। इस अवसर पर कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि देश में तमिलनाडू वेटरनरी विश्वविद्यालय के बाद राजुवास दूसरा विश्वविद्यालय है जिसका कार्य क्षेत्र पूरा राज्य है। कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि वे अपने 35 वर्ष के शैक्षिक व प्रशासनिक अनुभव के साथ ही राजुवास के शैक्षणिक, अनुसंधान और प्रसार शिक्षा कार्यों को तेजी से लागू करने का प्रयास करेंगे। विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर, अधिकारीगण, सभी शिक्षकों ने नवनियुक्त कुलपति प्रो. गर्ग को बधाई दी।

**किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।**

–महात्मा गांधी

# विश्वविद्यालय समाचार

## स्वाधीनता दिवस पर कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग द्वारा ध्वजारोहण और सलामी

### उत्कृष्ट कार्यों के लिए विद्यार्थी, कर्मचारी एवं शिक्षक हुए सम्मानित

स्वाधीनता दिवस के 75वें पर्व पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने दीवान–ए–आम में ध्वजारोहण कर सलामी दी। इस अवसर पर कुलपति प्रो. गर्ग ने देश के स्वतंत्रता सेनानियों, अमर शहीदों और देश की आजादी के लिए बलिदान करने वाले शहीदो के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर देश की एकता, अखण्डता और विकास के लिए प्राण–प्रण से जुटने का आह्वान किया। कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौर में भी विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, अनुसंधान एवं प्रसार कार्यक्रमों को निरंतर बनाए रखने हेतु विश्वविद्यालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों की सराहना की। कुलपति ने शैक्षणिक, उल्लेखनीय सेवाओं और कार्यों के लिए 62 जनों को सम्मानित किया। समारोह में शैक्षणिक, सांस्कृतिक–खेलकूद और एन.सी.सी. में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए 39 छात्र–छात्राओं के नामों की घोषणा की। समारोह में विश्वविद्यालय के कुलसचिव अजीत सिंह, वित नियंत्रक प्रताप सिंह पूनियां, अधिष्ठाता प्रो. आर.के सिंह, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. एस.सी. गोस्वामी सहित अन्य डीन–डायरेक्टर, अधिकारीगण, शिक्षक और कर्मचारी उपस्थित थे।

## महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद का 'जिला ग्रीन चैंपियन पुरस्कार' वेटरनरी विश्वविद्यालय को

भारत सरकार के उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद का 'जिला ग्रीन चैंपियन पुरस्कार' राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय को प्राप्त हुआ है। 24 अगस्त को कलक्ट्रेट कार्यालय में आयोजित वीडियो कांफ्रेंस के दौरान जिला कलक्टर नमित मेहता ने राजुवास के कुलपति प्रो. सतीश के गर्ग को यह पुरस्कार प्रदान किया। विश्वविद्यालय को स्वच्छता एक्शन प्लान के अंतर्गत समितियों के गठन और सैनिटेशन, हाइजीन, वेस्ट मैनेजमेंट, वाटर मैनेजमेंट, एनर्जी मैनेजमेंट और ग्रीनरी मैनेजमेंट में उत्कृष्ट कार्य के लिए यह पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर जिला कलक्टर मेहता ने कहा कि राजुवास को मिला यह पुरस्कार जिले के लिए गर्व का विषय है। विश्वविद्यालय द्वारा स्वच्छता और इससे सम्बद्ध विषयों पर बेहतर कार्य किया गया। यह दूसरों के लिए अनुकरणीय होगी। तरीके से कार्य करने के प्रयास किए जाएंगे। कार्यक्रम के दौरान कुलसचिव अजीत सिंह राजावत एवं प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया मौजूद रहे। इस अवसर पर कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय को जिला ग्रीन चैंपियन सर्टिफिकेट मिलना वेटरनरी विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है। अब हमें रचनात्मक सोच और ठोस उपलब्धियों की स्थिरता के लिए एक मजबूत नींव के साथ महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद् की इस पहल को आगे बढ़ाना होगा। स्वच्छता, अपशिष्ट प्रबंधन, जल प्रबंधन, हरित आवरण और ऊर्जा सरंक्षण के मामले में वेटरनरी विश्वविद्यालय अन्य संस्थानों के लिए अनुकरणीय है, जो शैक्षिक उद्देश्य के लिए अपनी पहल के अलावा राष्ट्रीय विकास के लिए प्रमुख आवश्यकता है। इस एक दिवसीय कार्यशाला में राजुवास के संस्थापक एवं पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने पर्यावरण स्वच्छता की महत्तता के साथ वन हेल्थ संकल्पना पर प्रकाश डाला तथा इस दिशा में किये जा सकने वाले सभी बिन्दुओं पर चर्चा की। कार्यशाला में बीकानेर स्थिति उच्च शिक्षण संस्थानों के प्रिंसिपल व अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में प्रो. आर.के. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. संजीता शर्मा, अधिष्ठाता पी.जी.आई.वी.ई.आर. जयपुर, प्रो. राजीव कुमार जोशी, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, नवानिया, उदयपुर सहित विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर्स की भी कार्यशाला में सहभागिता रही। प्रो. आर. के. धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

## पशुधन क्षेत्र में उत्पादकता में सुधार करने में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना की भूमिका पर वेबिनार

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक पी.जी.आई.वी.ई.आर, जयपुर स्थित आर.के.वी.वाई. परियोजना "पशुजन्य रोग निदान, निगरानी एवं निवारण केन्द्र" द्वारा "आजादी के अमृत महोत्सव भारत 75" के उपलक्ष मे "राजस्थान के संदर्भ में पशुधन क्षेत्र में उत्पादकता में सुधार करने में आर.के.वी.वाई. की भूमिका" विषय पर दिनांक 28 अगस्त को राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि आर.के.वी.वाई. की सहायता से सभी केन्द्रीय एवं राज्य स्तरीय विश्वविद्यालयों ने अपने आधारभूत सरंचना को मजबूत किया है, तथा विश्वविद्यालयों एवं कृषि, पशुपालन, गोपालन आदि विभागों ने मिलकर गरीब किसानों के विकास के लिए अच्छा कार्य किया है। राजुवास आर.के.वी.वाई. के माध्यम से नई परियोजनाएं शुरू करेगा जिससे माननीय प्रधानमंत्री जी के किसान की आय दुगुनी करने के प्रयासों को सफल किया जा सकेगा। राजुवास के संस्थापक एवं पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने राजस्थान के संदर्भ में पशुधन क्षेत्र में उत्पादकता में सुधार करने में आर.के.वी.वाई. की भूमिका पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत कर बताया कि राज्य के विकास मे कृषि एवं पशुधन का विशेष महत्व है तथा प्रदेश की अर्थव्यवस्था में पशुपालन एक उत्प्रेरक का कार्य कर रहा है। कार्यक्रम के अतिथि भास्कर ए. सावंत, आईएएस, प्रमुख शासन सचिव कृषि, उद्यानिकी एवं सहकारिता विभाग, राजस्थान सरकार ने कहा कि राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अंतर्गत विश्वविद्यालयों मे जो आधारभूत संरचना बनकर तैयार हुई है व अनुसंधान हो रहे है वो किसान, पशुपालक व आमजन को लंबे समय तक परिणाम देगे जिससे देश व प्रदेश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होगी। भारत सरकार के पशुपालन आयुक्त डॉ. प्रवीण मलिक ने राष्ट्रीय कृषि विकास योजना अंतर्गत संपूर्ण देश में पशुपालन के क्षेत्र में हुई प्रगति के बारे में जानकारी दी तथा भविष्य में इस योजना को जारी रखते हुए पशुपालन के क्षेत्र में अधिक फंड उपलब्ध कराये जाने का अनुरोध किया जिससे पशुपालन के क्षेत्र मे नई–नई तकनीकों का विकास के माध्यम से बीमारियों निदान, निगरानी एवं निवारण किया जा सके। कार्यक्रम में कृषि आयुक्त डॉ. ओमप्रकाश, आईएएस ने आर.के.वी.वाई. द्वारा पशुपालन के क्षेत्र में अभी तक के बजट आवंटन को प्रदर्शित करते हुये भविष्य में इस क्षेत्र को अधिक प्राथमिकता देने का कहा। इस वेबिनार में पशुपालन विभाग के संयुक्त शासन सचिव श्रीमान लक्ष्मी कांत बालोत, गोपालन विभाग के निदेशक डॉ लाल सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज बीकानेर के अधिष्ठाता प्रों आर.के. सिंह कार्यक्रम में सम्मिलित रहे। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर्स व अन्य अधिकारी मौजूद रहे। पी.जी.आई. वी.ई.आर, जयपुर की अधिष्ठाता प्रो. संजीता शर्मा ने सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के आयोजन सचिव डॉ. धर्मसिंह मीना थे।

## कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने जयपुर में प्रशासनिक अधिकारियों से की भेंट

### पशुपालन के क्षेत्र में भविष्य की कार्य योजना पर की चर्चा

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने 31 अगस्त को जयपुर प्रवास के दौरान प्रशासनिक अधिकारियों से मुलाकात कर विश्वविद्यालय की उपलब्धियों एवं भविष्य की कार्य योजनाओं पर विस्तृत चर्चा की। कुलपति प्रो. गर्ग ने पशुपालन विभाग की शासन सचिव आरूषी मलिक से भेंट कर विश्वविद्यालय द्वारा की जा रही विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी एवं भविष्य की कार्य योजनाओं से अवगत किया। पशुपालन विभाग की शासन सचिव मलिक ने विश्वविद्यालय को प्रशासनिक स्तर पर हर संभव सहयोग के लिए आश्वस्त किया। कुलपति प्रो. गर्ग ने आयुक्त कृषि एवं उद्यानिकी डॉ. ओमप्रकाश से मुलाकात कर विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत किये गये कार्यों से अवगत करवाया। कृषि आयुक्त ने वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा डेयरी एवं खाद्य प्रसंस्करण, बकरी के दूध पर शोध कार्य, राजस्थान में आर.के.वी.वाई. के तहत मुर्गीपालन को बढ़ावा देने एवं राजुवास के पीजीआईवीईआर की उन्नत दुग्ध परीक्षण व अनुसंधान प्रयोगशाला द्वारा तैयार दुग्ध गुणवत्ता तकनीक को आमजन तक पहुंचाने की मंशा जाहिर की। कुलपति ने बीकानेर स्थित पशुचिकित्सा संकुल को अत्याधुनिक चिकित्सालय के रूप में विकसित करने हेतु प्रस्ताव रखा, जिसे कृषि आयुक्त ने प्रोजेक्ट के तहत सुदृढ़ीकरण हेतु सुझाव दिया। कुलपति प्रो. गर्ग ने वित्त विभाग की संयुक्त शासन सचिव हेमपुष्पा शर्मा से मुलाकात कर माननीय मुख्यमंत्री द्वारा बजट घोषणा 2021 में खोले गये डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बस्सी, जयपुर एवं डेयरी सांइस एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, बीकानेर को इसी शैक्षणिक वर्ष में शुरू करने का आश्वस्त किया तथा वेटरनरी महाविद्यालय, नावां, नागौर के लिए समयबद्ध तरीके से कार्य की योजना पर चर्चा की। जोधपुर में खोले जा रहे वेटरनरी महाविद्यालय के लिए अतिरिक्त बजट का आग्रह किया। शिष्टाचार भेंट के दौरान कुलपति प्रो. गर्ग ने पशुपालन विभाग के संयुक्त शासन सचिव लक्ष्मीकांत बालोत, आर.सी.डी.एफ. के मैनेजिंग डायरेक्टर कन्हैयालाल स्वामी, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के नोडल ऑफिसर के.सी. मीना, गोपालन विभाग के निदेशक डॉ. लाल सिंह एवं अन्य अधिकारियों से मुलाकात की। इस अवसर पर प्रो. धर्मसिंह मीना एवं लाइजन अधिकारी डॉ. गोविन्द सहाय गौतम भी मौजूद रहे।

## राजुवास ई-पशुपालक चौपाल का आयोजन

### पॉलिथीन के उपयोग को कम करके गायों को नुकसान से बचाएं

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा दिनांक 11 अगस्त को राज्य स्तरीय ई–पशुपालक चौपाल में गायों में पॉलिथीन और अखाद्य पदार्थों से नुकसान और बचाव विषय पर विशेषज्ञ प्रो. टी.के. गहलोत ने पशुपालकों से संवाद किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने चौपाल में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि गायों में पॉलिथीन खाने की समस्या बहुत गंभीर है जो कि गांव की तुलना में शहरों में अधिक है। पॉलिथीन के उपयोग को कम करके पशुओं को नुकसान से बचाया जा सकता हैं। आयोजन सचिव एवं निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विषय प्रवर्तन करते हुए बताया कि गायों में पॉलिथीन व अन्य अखाद्य पदार्थों के खाने से पशु स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। पॉलिथीन की पशु व मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालने के साथ–साथ वातावरण को प्रदूषित करने में भी अहम भूमिका है। आंमत्रित विशेषज्ञ प्रो. टी.के. गहलोत, पूर्व निदेशक क्लिनिक्स, राजुवास, बीकानेर ने बताया कि गायों के शरीर में फास्फोरस, सोडियम, पोटेशियम एवं कैल्शियम जैसे तत्वों की कमी, पाइका रोग का प्रमुख कारण है। इस रोग से ग्रसित गाय अखाद्य पदार्थ जैसे पॉलिथीन, चमड़ा, पलास्टिक, कपड़ा, कीले, तार, कांच आदि का सेवन करती है। ये अखाद्य पदार्थ गाय की जुगाली से बाहर नहीं आते है एवं अपच एवं आफरे की समस्या उत्पन्न करते है। इनसे गायों के उत्पादन स्तर में गिरावट आती है एवं उनकी अकाल मृत्यु भी हो सकती है अतः इन सभी समस्याओं से बचने के लिए खाद्य पदार्थों को पॉलिथीन में डालकर ना फेंके, गायों को संतुलित आहार देवें, बांटे में मिनरल मिक्चर का उपयोग करें, वर्ष में तीन बार कृमि नाशक दवा पिलाएं, दूध निकालने के बाद गायों को लावारिस ना छोड़े आदि बातों को ध्यान में रखकर इन समस्या से समाधान पा सकते है।

### भेड़-बकरियों में पी.पी.आर. रोग आर्थिक नुकसान का कारण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 25 अगस्त को राज्यस्तरीय ई–पशुपालक चौपाल में भेड़–बकरियों में पी.पी.आर. रोग विषय पर विशेषज्ञ प्रो. आर.के. तंवर ने पशुपालको से संवाद किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने चौपाल में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय का हमेशा से ही प्रयास रहा है कि विश्वविद्यालय के शोध कार्यों एवं वैज्ञानिक तकनीकों का पशुपालकों को सीधा–सीधा लाभ मिल सके। विश्वविद्यालय के प्रसार कार्यक्रमों के माध्यम से पशुपालक अपनी सुविधा अनुसार कहीं भी बैठकर परिचर्चा का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाए, यह विश्वविद्यालय का प्रयास है और पशुपालक कल्याण के कार्यक्रमों में आपकी भागीदारी से इसे और अधिक बल मिलेगा। आयोजन सचिव एवं निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विषय प्रवर्तन करते हुए बताया कि भेड़–बकरियों में पी.पी.आर. रोग एक विषाणु जनित संक्रामक रोग है जो कि भारत के सभी राज्यों मे मिलता है। प्रायः यह रोग ये एक वर्ष से छोटे मेमनों को अधिक प्रभावित करता है इसे भेड़ एवं बकरी प्लेग भी कहते है। इस रोग से ग्रसित पशुओं में मृत्युदर 50 से 80 प्रतिशत रहती है। पशुपालको को हर वर्ष इस रोग से आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता हैं आंमत्रित विशेषज्ञ प्रो. आर.के. तंवर, पूर्व निदेशक क्लिनिक्स, राजुवास, बीकानेर ने विस्तृत चर्चा करते हुए पी.पी.आर. रोग के लक्षण, बचाव व उपचार पर पशुपालकों की समस्याओं का समाधान किया। प्रो. तंवर ने बताया कि पशुचिकित्सक की सलाह से ग्रसित पशुओं का उपयुक्त ईलाज करवाकर एवं स्वस्थ पशुओं में नियमित टीकाकरण करवाकर इस रोग से बचाव कर सकते है। मृत पशु एवं संक्रमित खाद्य पदार्थ को गढ़े में उपयुक्त तरीके से दबाकर, स्वस्थ पशुओं में इस रोग के संक्रमण को रोका जा सकता है।

## विश्वविद्यालय के विभिन्न संस्थानों व इकाईयों में किया गया सघन पौधारोपण

स्वाधीनता दिवस पर माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति के निर्देशानुसार वेटरनरी विश्वविद्यालय मुख्य परिसर बीकानेर सहित विश्वविद्यालय की विभिन्न संस्थानों और इकाईयों में सघन पौधारोपण किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग एवं विश्वविद्यालय की प्रथम महिला श्रीमती मंजू गर्ग ने नीम का पौधा लगाकर पौधारोपण कार्यक्रम की शुरूआत की। पौधारोपण कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कर्मचारियों, शिक्षकों व अधिकारियों ने बड़े उत्साह में शामिल होकर नीम, करंज, अशोक, शीशम विभिन्न जाति के पौधे रोपित किए एवं इनकी नियमित देखभाल एवं रक्षा का प्रण लिया।

## यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

### स्कूली बच्चों के लिए ऑनलाईन कम्प्यूटर साक्षरता कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत गोद लिए गांव गाढ़वाला में 26–28 अगस्त, 2021 तक तीन दिवसीय कम्प्यूटर साक्षरता कार्यक्रम का ऑनलाईन आयोजन किया गया। यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने बताया कि वर्तमान में कम्प्यूटर का हर क्षेत्र में उपयोग किया जा रहा है अतः इस तरह के कार्यक्रमों से बच्चों में कम्प्यूटर सीखने के प्रति जागरूकता बढेगी जो कि उनके भविष्य में भी सहायक सिद्ध होंगी। इस कार्यक्रम में कक्षा 10 से 12 के 35 विद्यार्थियों ने भाग लिया तथा विद्यार्थियों को कम्प्यूटर, इंटरनेट, गूगल, जीमेल, एम.एस. वर्ड, इत्यादि की प्रारंभिक जानकारी दी गई। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गाढ़वाला के प्रधानाचार्य श्रवण कुमार गोदारा ने बताया कि इस शिक्षण कार्यक्रम से विद्यालय के बच्चे लाभान्वित हुए।

# पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

### पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ ( चूरू )

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 4, 7, 13, 21 एवं 25 अगस्त को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 118 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ ( श्रीगंगानगर )

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 3, 6, 11, 17, 21 एवं 24 अगस्त को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 175 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया ( नागौर )

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया –लाड़नू द्वारा 4, 7, 11, 13, 16, 18, 20 एवं 23 अगस्त को आयोजित ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 192 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर ( भरतपुर )

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 2, 6, 10, 13, 19, 24 एवं 26 अगस्त को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 128 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 2, 6, 16, 24 एवं 27 अगस्त को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 155 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 5, 11, 13, 17, 18 एवं 20 अगस्त को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 157 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर ( बीकानेर )

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 5, 12, 16, 20, 24 एवं 31 अगस्त को आयोजित ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 266 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 4, 6, 10, 13 एवं 23 अगस्त को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 126 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा ( चित्तौड़गढ़ )

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौडगढ़) द्वारा 6, 13, 25 एवं 26 अगस्त को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 103 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 11, 12, 13, 18, 20, एवं 28 अगस्त को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 155 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनं द्वारा 6, 12, 14, 21, 25 एवं 31 अगस्त को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 140 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 4, 10, 16, 20 एवं 27 अगस्त को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 91 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 3, 5, 11, 13, 16, 18 एवं 28 अगस्त को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 173 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर ( हनुमानगढ़ )

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 12–13 एवं 27–28 अगस्त को आयोजित दो दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 50 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

## वैज्ञानिक पशुपालन से अधिक आय संभव : कुलपति प्रो. गर्ग

**कुलपति प्रो. गर्ग ने जोधपुर एवं जोबनेर पशु विज्ञान केन्द्रों का किया निरीक्षण**

वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने जोबनेर एवं जोधपुर स्थित पशु विज्ञान केन्द्रों का 20 अगस्त एवं 27 अगस्त को निरीक्षण कर पशुपालकों के कल्याण के लिए चलाए जा रहे प्रसार कार्यक्रमों की जानकारी ली। इस अवसर पर कुलपति प्रो. गर्ग ने प्रगतिशील पशुपालकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन समय की आवश्यकता है और पशुपालक इसे अपनाकर अधिक आमदनी प्राप्त कर सकते है। वेटरनरी विश्वविद्यालय पशुपालन की नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकों को गांव, ढ़ाणी में अन्तिम छोर पर बैठे पशुपालकों तक पहुंचाने के लिए संकल्पबद्ध है। कुलपति ने पशुपालकों को पशुपालन की विभिन्न संभावनाओं से अवगत करवाते हुए नवीनतम तकनीकों को अपनाकर वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन करने के लिए प्रेरित किया। प्रो. राजेश कुमार धूड़िया निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास बीकानेर ने केन्द्र द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों जैसे–पशुपालक सलाहकारी सेवाएं, प्रशिक्षण कार्यक्रम, रोग निदान सेवाऐं आदि से अवगत करवाया। पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर के प्रभारी अधिकारी डॉ. अशोक बैंदा व टीचिंग एसोसियेट ने कुलपति का स्वागत किया। पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर में डॉ. आनन्द राज पुरोहित, वरिष्ठ पशुचिकित्सा अधिकारी भी मौजूद रहे। केन्द्र के प्रभारी डॉ. बी.एस. सैनी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन केन्द्र के टीचिंग एसोसिएट डॉ. अमित कुमार चोटिया व डॉ. मनीष सोनगरा ने किया।

## वर्षा ऋतु में पशुओं का मक्खी-मच्छरों से बचाव

पशुपालक भाइयों, इस वर्ष पूरे राज्य में वर्षा का आगमन हो चुका है। इस समय हरे चारे की उपलब्धता हो चुकी है और गड्ढे, तालाब, नदियों में पानी की अच्छी आवक हो रही है। वर्षाकाल चारे पानी की उपलब्धता के साथ पशु स्वास्थ्य सम्बन्धित कुछ परेशानियां भी साथ लेकर आता है। बरसात में भीगने से छोटे पशुओं में निमोनिया होना आम बात है। इसके अतिरिक्त पशु शरीर पर घाव होने की अवस्था में उनमें कीड़े पड़ने से पशु को बहुत तकलीफ होती है। इस मौसम में उमस बढ़ जाती है वहीं मच्छरों का भी प्रकोप बढ़ जाता है। मच्छर इंसानों का तो खून चूसते ही हैं, साथ ही पशुओं को भी नुकसान पहुंचाते हैं। इनके काटने से पशु तनाव में चला जाता है, जिससे दूध उत्पादन की क्षमता पर काफी असर पड़ता है। जैसे मक्खी और मच्छर इंसानों को परेशान करते हैं वैसे पशुओं को भी इनके बार–बार बैठने और भिनभिनाने से दिक्कत होती है। पशु बोल नहीं सकते हैं परन्तु इसका सीधा असर इनके उत्पादन पर पड़ता है। पशु स्वस्थ है तो दूध भी ज्यादा मिलेगा। जब पशुओं को मच्छर काटते हैं तो वो सही ढंग से खा नहीं पाते हैं और न ही जुगाली कर पाते हैं, जिससे 5 से 10 प्रतिशत दूध में कमी आ जाती है। कभी–कभी मच्छर पशुओं को इतना काटते हैं कि उनके पैरों से खून भी आ जाता है। मच्छर काटने से पशुओं में होने वाली खून की कमी और चिड़चिड़ाहट से उत्पादन पर सीधा असर पड़ सकता है। अतः वर्षाकाल में पशुपालकों को सावचेत रहकर निम्न प्रकार से उचित प्रबंधन करना चाहिए:

### घरेलू उपचार:

- ❖ नीम व तुलसी के पत्ते 5 सेकेंड के लिए जला कर एक कोने में रख दें और बाद में बुझा दें उससे उठने वाला धुआं मच्छरों को दूर करता है।
- ❖ अजवायन का तेल या लौंग के तेल से भी मच्छर भगा सकते हैं।
- ❖ पशुओं के बाड़े के आसपास जलभराव नहीं होना चाहिए।
- ❖ शाम के समय मच्छरों के लिए पशुओं पर मच्छरदानी का प्रयोग कर सकते हैं।
- ❖ फर्श पर नीम के तेल का लेप कर सकते हैं, इससे मक्खियां दूर रहेगी तथा पशुधन को भी कोई तकलीफ नहीं होगी।

### वैज्ञानिक उपचार:

- ➢ पशुओं के बाड़े को सूखा रखें एवं बाड़े की साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखें साथ ही पशुपालकों को चाहिए कि पशु बाड़े के आस–पास गन्दा पानी एकत्र ना होने दें, ताकि इन मच्छर, मक्खी, कीट इत्यादि को पनपने व फैलने से बचाया जा सके।
- ➢ मच्छरदानी और कीटनाशक दवाइयों का प्रयोग कर इस समस्या से निजात पाया जा सकता है। परमेथ्रिन या डेल्टामेथ्रिन या सायपरमेथ्रिन को 1 लीटर पानी में 3 मि.ली. मात्रा में घोलकर पशु बाड़े की फर्श पर, दीवारों पर और पशु बाड़े के आसपास नियमित अंतराल में छिड़काव करें।
- ➢ इस मौसम में पशु के शरीर पर किसी भी प्रकार के घाव की देखभाल सही तरीके से करें अन्यथा घाव में मक्खी बैठकर अण्डे देती है और घाव में कीड़े पड़ जाते हैं। घाव को अच्छी प्रकार से लाल दवा से धोकर, एंटीबायोटिक मलहम लगायें।
- ➢ संक्रामक रोग से ग्रसित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से दूर रखें, जिससे संक्रमण स्वस्थ पशुओं में ना हो।
- ➢ पशुओं के चारे–दाने को गन्दे बरसाती पानी के संक्रमण से बचा कर रखें। इस प्रकार अन्तःपरजीवियों के संक्रमण से भी पशुओं को बचाया जा सकेगा।
- ➢ वर्षा के समय पोखर, गड्ढों में परजीवी युक्त पानी भरा होता है। अतः पशुपालक ध्यान दें और पशुओं को गन्दा पानी पीने से बचायें।
- ➢ अन्य किसी परेशानी में तुरन्त पशुचिकित्सक से सम्पर्क कर अपने पशुओं को स्वस्थ रखें।

**डॉ. जे.पी. कच्छावा एवं डॉ. लोकेश्वर सिंह**
**वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर**

## अधिक हरा चारा खाने से बारिश में हो सकता है आफरा

बारिश के मौसम में पशुओं में कई तरह के रोगों के होने की संभावना बनती है। मौसम में अचानक परिवर्तन होने के कारण तथा इस मौसम में पशुओं को खिलाए जाने वाले चारे में अचानक बदलाव से पशुओं में आफरा होने की संभावनाएं रहती है। जुगाली करने वाले पशु जैसे गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि में ताजा हरा चारा ज्यादा मात्रा में खाने से, अधिक फलीदार चारा खाने से, पशु आहार में अचानक परिवर्तन से, पशु आहार पूर्ण रूप से संतुलित न होने की वजह से अथवा जो पशु खुले में चरने के लिए छोड़ दिये जाते हैं, उनके द्वारा न पचने वाले पदार्थ जैसे पॉलिथीन या कोई नुकीली वस्तु निगलने पर पशुओं के पाचन तंत्र में गड़बड़ हो जाती है। पशु के पेट में अत्यधिक मात्रा में गैस अथवा झाग बनते हैं और पशु का पेट (रूमन) फूल जाता है, जिसे सामान्यतः **''आफरा''** कहते है। पेट फूलने के कारण फेफड़ों पर अत्यधिक दबाव पड़ता है, पशु को सांस लेने में कठिनाई आती है तथा तुरन्त चिकित्सा न करवाने पर पशु की मृत्यु तक हो जाती है।

### आफरा रोग के मुख्य लक्षण

- ❖ इस रोग में मुख्यतः पेट में गैस बनकर एकत्रित हो जाती है, जिसके फलस्वरूप बायां पेट फूल जाता है।
- ❖ पशु खाना–पीना व जुगाली करना बंद कर देता है।
- ❖ पशु बहुत बैचेन हो जाता है।
- ❖ श्वास लेने में कठिनाई से पशु बार–बार उठता–बैठता है व जीभ बाहर निकालकर सांस लेता है।
- ❖ पशु के पेट में गैस या झाग इकट्ठे हो जाते हैं व फूले पेट पर चोट मारने पर ढ़ोल जैसी आवाज करने लगता है।
- ❖ पशु के मुंह से झाग युक्त लार टपकने लगती है।
- ❖ गहरी लम्बी सांस के साथ पशु पैर पटकता है।
- ❖ पशु पेशाब व मल त्याग करना बंद कर देता है।

### आफरा रोग से बचाव के लिए क्या करें

- ❖ हरा चारा जैसे बरसीम ज्वार, रिजका, बाजरा आदि काटने के बाद कुछ समय पड़ा रहने दें, उसके बाद खिलाएं।
- ❖ हरा चारा पूरी तरह पकने के बाद ही खिलाएं।
- ❖ चारा भूसा आदि खिलाने से पहले पानी पिलाएं।
- ❖ चारा एवं दाने में एकदम से बदलाव न करें।
- ❖ पशुओं को केवल हरा चारा न खिलावें बल्कि उनको सूखा चारा व हरा चारा मिलाकर संतुलित मात्रा में देवें।
- ❖ बासी, सड़ा गला, फफूंदे लगा व बचा हुआ खाना पशुओं को न दें।
- ❖ पशुओं को रोज खनिज लवण मिश्रण बांटें में मिलाकर देवें।
- ❖ पशुओं की ठाण/खेली में नमक की ईंट रखे जिसे वह उसे चाटता रहे व उसकी पाचन प्रक्रिया सुचारू चलती रहे।

### आफरा रोग में प्राथमिक उपचार

पशुओं में आफरा जानलेवा हो सकता है, अतः जल्दी से जल्दी पशुचिकित्सक से उपचार की व्यवस्था करें।

- ❖ सबसे पहले पशु को बैठने ना दें, उसे घुमाते–फिराते रहें।
- ❖ बायें पेट पर हल्के हाथ से मालिश करें और उसकी जीभ पकड़कर मुंह से बाहर खींचें ताकि गैस बाहर निकल जाए।
- ❖ फेफड़ों पर गैस का दबाव कम करने के लिए रोगी पशु को ढलान वाले स्थान पर इस प्रकार बांधें, जिससे उसका धड़ कुछ ऊंचा रहे।
- ❖ 30 मि.ली. तारपीन के तेल को 500 मि.ली. मीठे तेल में मिलाकर पिलाएं।
- ❖ एक लीटर छाछ में 50 ग्राम हींग और 20 ग्राम काला नमक मिलाकर पिलाने से भी पशु को आराम मिल सकता है।
- ❖ आपातकालीन स्थिति में पशु के बांई ओर के पेट पर त्रिकोने स्थान के बीचों बीच चाकू या ट्रोकार कैन्यूला की सहायता से छेद कर पेट में से गैस को धीरे–धीरे बाहर निकाला जा सकता है। ऐसा करने से पशु को एकदम से आराम आ जाएगा।

**डॉ. दीपिका धूड़िया**
**सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर**

# सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–सितम्बर, 2021

| पशु रोग | पशु प्रकार | अत्यधिक संभावना | अधिक संभावना | मध्यम संभावना | कम संभावना | बहुत कम संभावना |
|---|---|---|---|---|---|---|
| लंगड़ा बुखार | गाय, भैंस | – | – | – | – | जोधपुर |
| ब्लू टंग रोग | भेड़ | – | – | – | जैसलमेर | बाड़मेर, बीकानेर, चूरू, गंगानगर, जोधपुर, नागौर, भीलवाड़ा, दौसा, सीकर, झुंझुनू, अलवर, भरतपुर, जयपुर, करौली, अजमेर, पाली, जालोर, चित्तौड़गढ़, डुंगरपुर, बांसवाड़ा, बारां |
| फड़किया रोग | भेड़, बकरी | जोधपुर | – | – | – | – |
| खुरपका मुंहपका रोग | गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट | – | – | – | – | गंगानगर, हनुमानगढ़, बारां, भीलवाड़ा, झालावाड़ |
| गलघोंटू रोग | गाय, भैंस | अलवर, बारां | अजमेर, जयपुर, कोटा, पाली | – | – | बारां, बाड़मेर, भरतपुर, चूरू, धौलपुर, झालावाड़, जोधपुर, नागोर, सीकर, टोंक, हनुमानगढ़, बीकानेर, चूरू, जैसलमेर, जालोर, सिरोही, डुंगरपुर, बांसवाड़ा, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, राजसमन्द, बूंदी, सवाई माधेपुर, झालावाड |
| पी.पी.आर. | बकरी | – | – | – | – | गंगानगर, बारां |
| माता रोग | भेड़, बकरी | – | – | – | – | गंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, बांसवाड़ा |

**विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के.सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं0 0151–2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224**

## सफलता की कहानी

## सोजत बकरी का पालन कर सफलता की ओर अग्रसर लालसिंह

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी बकरी को गरीब की गाय कहा करते थे। आज के परिवेश में भी यह कथन बहुत महत्वपूर्ण है। आज जब एक ओर पशुओं के लिए दाने–चारे और दवाइयां महंगी साबित होने से पशुपालन आर्थिक दृष्टि से कम लाभकारी साबित हो रहा है वहीं बकरी पालन कम लागत एवं सामान्य देखरेख में गरीब किसानों एवं खेतिहर मजदूरों की जीविकोपार्जन का एक महत्वपूर्ण साधन बन रहा है। ऐसे ही नागौर जिले के लाड़नू तहसील के कुसुम्बी गांव के लालसिंह जो की एक खेतिहर किसान हैं, जिन्होंने बकरी पालन को अपनी आजीविका का साधन बनाया है। लालसिंह ने दस सोजत नस्ल की बकरी एवं एक बकरे के साथ लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व अपना बकरी पालन व्यवसाय प्रारम्भ किया था। तत्पश्चात इन्होंने पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) आकर बकरी फार्म में बकरियों के रख–रखाव एवं खान–पान सम्बन्धित जानकारी ली जिसमें उन्हें बकरियों के आवास, सन्तुलित आहार प्रबंधन, ग्याभिन पशुओं के आहार प्रबंधन, ब्रीडर बकरों एवं मेमनों के आहार प्रबंधन के साथ–साथ बकरियों की समुचित वृद्धि हेतु नियमित समय अंतराल पर कृमिनाशक दवा का उपयोग, बकरियों में विभिन्न रोगों हेतु टीकाकरण, खनिज मिश्रण का महत्व आदि के बारे में जानकारी दी गयी जिसे इन्होंने अपनाया। यही कारण है कि आज लालसिंह की सभी बकरियां स्वस्थ हैं एवं उचित वृद्धि प्रदर्शित कर रही हैं। आज इनके पास 35 बकरियां हैं। 5 बकरों को उन्होंनें एक साल की उम्र में लगभग डेढ़ लाख रूपये में बेच दिया। लालसिंह नियमित तौर पर पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया के वैज्ञानिकों से फोन पर या स्वयं केन्द्र पर आकर जानकारी लेते रहते हैं साथ ही इससे सम्बन्धित शंकाओं का समाधान भी कर लेते हैं। इस बकरी पालन से लालसिंह काफी उत्साहित है ही इसी के साथ वो आसपास के अन्य किसानों को भी बकरी पालन हेतु प्रेरित करते रहते हैं। **सम्पर्क–लालसिंह, गांव कुसुम्बी, लाडनूं, जिला नागौर (मो. 8079035070)**

## निदेशक की कलम से...

# हरे चारे का वैज्ञानिक विधि से संरक्षण आज की आवश्यकता

भारत जैसे विकासशील देशों में पशुधन आर्थिक दृष्टि से कमजोर लोगों के लिए ए.टी.एम का काम करता है। अतः कृषि के साथ–साथ पशुपालन एक महत्वपूर्ण व्यवसाय है। पशुधन से अधिक उत्पादन लेने हेतु पशुओं के खान–पान पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। वर्ष के कुछ महीनों में पशुओं के लिए हरा चारा प्रचूर मात्रा में उपलब्ध रहता है, जबकि अधिकतर महिनों में इसका बिल्कुल अभाव रहता है। वर्षा का स्वरूप भी एक जैसा नहीं रहता है। वर्ष के कुछ महीनों में जलवायु के उपयुक्त होने के कारण हरे चारे व घासों का अधिक उत्पादन होता है लेकिन नवम्बर, दिसम्बर तथा अप्रेल–जून में हरे चारे की अत्यधिक कमी रहती है। कभी–कभी बहुत अधिक बरसात होती है अथवा कई बार बहुत कम बारिश होती है तथा अधिकतर अकाल की स्थिति बनी रहती है। ऐसी परिस्थितियों में चारे की अधिक पैदावार के समय अतिरिक्त मात्रा को संरक्षित कर पशुओं को संतुलित आहार दिया जा सकता है तथा अभाव के समय इसे खिलाकर पशुओं की शारीरिक वृद्धि व उत्पादन को बरकरार रखा जा सकता है। दुधारू पशुओं से अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए उनके आहार में पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक व हरा चारा आवश्यक है। अतः अतिरिक्त चारे को उन दिनों के लिए संरक्षित कर लिया जाये, जब हरा चारा उपलब्ध नहीं हो पाता है। हरे चारे को वैज्ञानिक तकनीकों जैसे ''हे'' व साइलेज बनाकर संरक्षित करना सबसे अच्छे विकल्पों में से है। हरे चारे का साइलेज बनाकर संरक्षित करना एक महत्वपूर्ण तरीका है, साइलेज अवायवीय स्थिति में उच्चनमी वाली फसलों के नियंत्रित किण्वन का परिणाम है। साइलेज बनाने के लिए मोटे तने वाली फसले जैसे मक्का व ज्वार सबसे उपयुक्त फसले हैं। साइलेज बनाते समय चारे में नमी की मात्रा 65 प्रतिशत होनी चाहिए। इसी प्रकार हरे चारे को ''हे'' बनाकर भी संरक्षित किया जा सकता है। चारे की वे समस्त फसलें जिन्हें हरी अवस्था में खिलाया जाता है ''हे'' बनाने के लिए उपयुक्त होती है। इसमें रिजका, बरसीम, जई आदि महत्वपूर्ण फसलें है। ''हे'' बनाने के लिए चारे की किस्मों को उचित अवस्था में पुष्प अवस्था प्रारम्भ से लेकर मध्य तक काटना चाहिए। काटी गई फसलों को दो दिनों तक धूप में सुखाये तथा चार घंटे के अंतराल पर पलटें। तत्पश्चात् दो दिनों तक छाया में सुखायें इससे नमी 15 प्रतिशत के लगभग हो जाती है तथा हरापन बरकरार रहता है। अतः सभी किसान व पशुपालक भाइयों को हरे चारे की अधिक उपलब्धता के समय चारे को संरक्षित करना चाहिए, जिससे हरे चारे की कमी के समय पशुओं को हरा चारा उपलब्ध हो सके तथा पशुओं की शारीरिक वृद्धि व उत्पादकता पर असर नहीं पड़े।

**प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया,** निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर ( मो. 9414283388 )

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/ विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. ( डॉ. ) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. ( डॉ. ) आर.के. धूड़िया